उपसंहार

देवभाषा संस्कृत विश्वभर की भाषाओं में सबसे प्राचीन एवं श्रेष्ठ है। यह हमारा संस्कृत साहित्य आध्यात्मिक जगत की समस्याओं को सुलझाकर निःश्रेयस् की प्राप्ति कराता है। हमारे वेद, पुराण, उपनिषद्, स्मृतियां, रामायण, महाभारत एवं श्रीमद्भगवद् गीता आदि धार्मिक ग्रन्थ इसी भाषा में निबद्ध है। जिसके रहस्यों का ज्ञान संस्कृत भाषा के सम्यक् ज्ञान से किया जा सकता है। इन्ही कारणों से हमारी देव भाषा परम महनीया विद्वज्जन् सम्माननीया तथा सौभाग्य शोभनीयया है।

यह संसार ज्ञान का अथाह सागर है जिसमें मेरा ज्ञान उसकी एक बूँद के सदृश भी नहीं है। फिर भी मेरे द्वारा जो कुछ भी प्रयास किया गया वह काव्यशास्त्र एवं नाट्यशास्त्र के जटिल मार्ग सिद्धान्त को बोधगम्य और स्पष्टतर रूप में रखने का रहा है। इस संसार में चारों तरफ अपूर्णता की सत्ता व्याप्त है। यही सच है कि इस विश्व में एकमात्र परमात्मा के सिवाय कुछ भी पूर्ण नहीं है। अतः अपूर्ण को पूर्ण मान लेना प्रमादोन्माद कहा जा सकता है। अतएव अपूर्णता से पूर्णता की ओर संकल्पात्मक त्याग ही सद्गति एवं सम्यक् विचार है। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए मैंने हर प्रकार के संकोच को त्याग कर अपने विचारों को स्वतन्त्र रूप से प्रकट किया है।

प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध कुल सात अध्यायों में विभक्त है। जिसके अन्तर्गत प्रथम अध्याय में काव्य के उद्भव एवं विकास का उल्लेख किया गया है। इस अध्याय में बताया गया है कि संस्कृत तथा विश्व साहित्य के इतिहास में महाकाव्य का प्रारम्भिक रूप मौखिक भावनाओं के रूप में था, जिनकी परम्परा सहस्रों वर्षों से समाज में विद्यमान थी परन्तु वह ग्रन्थ के रूप में न थी। अनेक महाकाव्यों और नाटकों पर प्रत्यक्ष रूप से रामायण या महाभारत का प्रभाव है, साथ ही महाकाव्य के मानदण्ड और संरचना की अवधारणाएं भी इन्हीं दोनों उपजीव्य काव्यों के आधार पर निर्मित हुई। परवर्ती काव्य रचना के विभिन्न तत्व रामायण तथा महाभारत से ही पल्लवित हुए।

आदिकवि वाल्मीकि की कृति रामायण क्या स्थान है इस बारे में बताते हुए कहा गया है कि ऐतिहासिक काव्य और अलंकृत काव्य दोनों के ही गुण पाये जाते हैं। इस कृति में केवल युद्धों और विजयों का ही वर्णन नहीं है अपितु आलंकारिक भाषा में प्रकृति का भी रमणीय चित्र अंकित किया गया है। अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण यह भारतीय कवियों एवं नाटककारों के आकर्षण का केन्द्र रही है। अपनी रचना के दिन से लेकर रामायण भारतीय लेखकों, कवियों एवं नाटककारों के विचारों में नवीन स्फूर्ति भरती चली आई है। 'संस्कृत साहित्य एवं भारतीय वाङ्मय में राम के विषय में जिन लोगों ने भी कलम उठाई है वे सब वाल्मीकि के ऋणी हैं। भारत के बाहर भी अधिकांश लेखकों एवं कवियों ने राम विषयक प्रबन्धों में वाल्मीकि को मूलाधार माना है।

शोध प्रबन्ध के द्वितीय अध्याय में रामायण का सामान्य परिचय दिया गया है तत्पश्चात् वाल्मीकि का परिचय, निवास स्थान, बताते हुए रामायण के काण्ड वार कथावस्तु का विवेचन किया गया है।

शोध प्रबन्ध के तृतीय अध्याय में वाल्मीकि रामायण के पात्रों का चरित्र–चित्रण किया गया है, जिसमें महाकाव्य के नायक–राम, नायिका–सीता और प्रतिनायक–रावण प्रमुख है। महर्षि वाल्मीकि ने आदिकाव्य रामायण में राम को जहां एक आदर्श शासक, आदर्श पुत्र तथा आदर्श मित्र के रूप में चित्रित किया है वहीं उन्होंने अन्य पात्रों के माध्यम से अन्य आदर्शों की स्थापना की तथा एक ऐसे आदर्शवाद को रेखांकित किया जिसकी आज केवल कल्पना करना ही शेष है।

चतुर्थ अध्याय रमायण के भाव पक्ष से सम्बन्धित है। इसमें अंगीरस करुण पर विशेष रूप से विचार किया गया है। इसके अतिरिक्त वीर, हास्य, शान्त, बीभत्स, अद्भुत, रौद्र, वात्सल्य, भक्ति रसों का विवेचन हुआ है। तत्पश्चात् अलंकार योजना पर भी विचार किया गया है, इसमें शब्दालंकार तथा अर्थालंकारों का सोदाहरण विवेचन किया गया है।

शोध प्रबन्ध के पंचम अध्याय रामायण में कलापक्ष पर विवेचन किया गया है। इस अध्याय में बताया गया है कि वाल्मीकि ने अपने सम्पूर्ण रामायण महाकाव्य

में आद्ययन्त अनुष्टुप् छन्द का ही प्रयोग किया है। कथाप्रवाह के लिए छोटे और सरल छन्द की आवश्यकता होती है, अतएव इसका प्रयोग सुन्दर बन पड़ा है। इस अध्याय में यह भी बताया गया है कि रामायण में उत्तरकाण्ड के अतिरिक्त सभी काण्डों के अन्त में छन्दों का परिवर्तन हुआ है तथा एक सर्ग में भिन्न–भिन्न छन्दों का भी प्रयोग हुआ है, जैसे– सुन्दरकाण्ड में। तत्पश्चात् भाषा– शैली, रीतियां, गुण, प्राकृतिक दृश्यावली आदि का विवेचन प्रस्तुत किया है।

शोध–प्रबन्ध के छठवें अध्याय में रामायणकालीन सामाजिक, अर्थिक, सां–स्कृतिक एवं राजनीतिक विचारों पर विचार किया गया है। वर्ण–व्यवस्था, आश्रम–व्यवस्था, परिवार, विवाह, नारी की स्थिति, आर्थिक जीवन, कृषि, प्रशान, आचार–विचार, मनोरंजन, के साधन, साहित्य, विज्ञान, कला, धर्म आदि को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया गया है,

शोध प्रबन्ध के सप्तम अध्याय में रामायण में सांस्कृतिक चेतना तथा पर्याव–रण की अवधारणा को प्रस्तुत करते हुए कहा गया है कि मनुष्य आज के इस वैज्ञानिक युग में वह निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर होना चाहता है किन्तु यह प्रगति प्रकृति पर आक्रमण का पर्याय बन गई है जो इस सम्पूर्ण सृष्टि के समक्ष एक बड़ी समस्या के रूप में समुपस्थित है। पर्यावरण की इस समस्या के निरा–करण हेतु मनुष्य में पर्यावरण के प्रति चेतना व जागृति का होना अपेक्षित बताया गया है। तत्पश्चात् यह भी यह दिखाया गया है कि आज के मनुष्य की संवेदनाएँ केवल स्वार्थहित में सक्रिय है, जिसके चलते विस्तृत दृष्टिकोण से वह कुछ देख ही नहीं पा रहा है, किन्तु यदि यही स्थित और परिस्थितियाँ निर्बाधगति से उत्तरोत्तर बढ़ती रही तो वह दिन दूर नहीं जब स्वयं के हित के लिए और किसी को तो क्या वरन् अपनी संतान, अपने माता–पिता या मित्रों आदि का यदि अहित हो रहा है, तो भी व्यक्ति नहीं चूकेगा। वैसे इस स्थिति के आने में अब अधिक समय नहीं है, शुरूआत हो चुकी है और प्रसार बढ़ता जा रहा है।

अध्याय के अन्त में उपसंहार करते हुए निकर्ष को दिखलाया गया है। तत्पश्चात सन्दर्भ ग्रन्थसूची एवं संकेत ग्रन्थसूची का उल्लेख किया गया है।

रामायणकालीन मनुष्य की भांति आज मनुष्य को अपने जीवन में सर्वांगीणता को महत्व देना होगा। अध्यात्म की भावना का उदय भी अपने अन्तर में करना होगा क्योंकि विना ईश्वरीय सानिध्य के मनुष्य अथवा किसी के भी द्वारा कुछ भी करवाना सम्भव नहीं। मनुष्य के विचारों का सकारात्मक होना अवश्यक है तथा उसके कार्यों में सत्यता तथा करता है उसके अनुसार ही उसके आस–पास का वातावरण निर्मित होता जाता है। वेदों में इसीलिए मन को शिव संकल्प वाला हो तथा संपूर्ण पृथ्वी के प्रति ही शुभ भावना रखते हुए ईश्वर से उन सबके प्रति कल्याण हो ऐसी प्रार्थना की जाती थी। मनुष्य के सुख का मूलमंत्र भी यही है कि यदि उसके आस–पास का समस्थ प्राणी समुदाय प्रकृति तथा संपूर्ण वातावरण ही आनन्दपूर्ण होगा तो फिर उसका सुखी तथा आनन्दित होना स्वाभाविक ही है।

वर्तमान संदर्भों में रामायणकालीन पर्यावरणीय चेतना की उपयोगिता तब और बढ़ जाती है जब चारों ओर त्राहिमाम् की ध्वनि ही सुनाई पड़ रही हो, तो इससे निकलने के लिए मनुष्यमात्र को स्वयं ही उठकर खड़े होना पड़ेगा तथा श्रेष्ठ आचरण व श्रेष्ठ संकल्पों, कार्य संतुलन और स्वविवेक द्वारा पृथ्वी पर आए इस भयंकर पर्यावरण प्रदूषण रुपी शत्रु को जड़मूल से उखाड़ फेंकना होगा। तभी उसकी रामराज्य की कल्पना साकाररूप धारणकर भारत को पुनः विश्व के शीर्ष पर मुकुट की भांति सुशोभित कर पाने में सक्षम होगी।

इन विकृतियों को दूर करने के लिए मनुष्य को सार्थक पहल करनी होगी तथा सद्विचारों को उन्नत बनाने हेतु सद्साहित्य एवं ऐतिहासिक, श्रेष्ठ संघटनाओं एवं संरचनाओं से शिक्षा लेना भी अपेक्षित होगा।

निष्कर्ष रूप में यही कहा जा सकता है कि आज रामायण का अनुसरण करके मनुष्य सभी समस्यों पर विजय कर सकता है तथा अपने आत्मबल को जाग्रत कर विश्व में फिर से उच्च स्थान को प्राप्त कर सकता है जब भारत विश्व का प्रथम गुरु था तथा ज्ञानामृत की बिन्दु वृष्टि कर उसने संपूर्ण विश्व को नवजीवन दान दिया था। आज पुनः आवश्यकता है एक विश्वास की एक आशा की

एकजुट होकर प्रयास करने की जो इस समय जूझ रहे प्राणी समाज को मुक्ति दिला सकती है तथा खोए हुए गौरव की पुनः प्राप्ति करा सकती है।

***

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. संस्कृत साहित्य का इतिहास	:	आचार्य बलदेव उपाध्याय
2. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास	:	आचार्य कपिलदेव द्विवेदी
3. संस्कृत साहित्य की रूपरेखा	:	चन्द्रशेखर पाण्डेय एवं व्यास
4. संस्कृत साहित्य का संक्षिप्त इतिहास	:	वाचस्पति गैरोला
5. संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास	:	डॉ0 राधावल्भ त्रिपाठी
6. ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद	:	
7. रामायण	:	महर्षि वाल्मीकि गीताप्रेस
8. कालिदास की कला और संस्कृति	:	डॉ0 देवी दत्त शर्मा
9. कुमार सम्भव	:	मल्लिनाथ एवं सीताराम
10. रघुवंश महाकाव्य	:	कालिदास
11. मेघदूत	:	कालिदास
12. शिशुपालवध	:	महाकवि माघ
13. किरातार्जुनीय	:	महाकवि भारवि
14. साहित्य दर्पण	:	विश्वनाथ
15. काव्यप्रकाश	:	आचार्य मम्मट
16. महाभारत	:	महर्षि व्यास
17. वैदिक साहित्य की रूपरेखा	:	पाण्डेय एवं जोशी
18. नाट्यशास्त्र	:	आचार्य भरतमुनि
19. दशरूपक	:	धनंजय
20. काव्यालंकार सार संग्रह	:	उद्भट
21. अलंकार रत्नाकर	:	शोभाकर
22. काव्यालंकार सूत्रवृत्ति	:	वामन
23. काव्यादर्श	:	आचार्य दण्डी
24. ध्वन्यालोक	:	आनन्दवर्धन

25. रसगंगाधर : पं0 जगन्नाथ
26. वैदिक कहानियाँ : आचार्य बलदेव उपाध्याय
27. धर्मशास्त्र का इतिहास : पी0वी0 काणे
28. अभिनव भारतीय : अभिनव गुप्त
29. उत्तररामचरित : भवभूति
30. अष्टाध्यायी : पाणिनी
31. रामचरितमानस : तुलसीदास
32. वक्रोक्तिजीवित : आचार्य कुन्तक
33. सरस्वतीकण्ठाभरण : भोजराज
34. श्रृंगार प्रकाश : भोजराज
35. रामायण के कुछ आदर्श पात्र : जयदयाल गोयन्दका
36. वाल्मीकि रामायण में पर्यावरण चेतना : डॉ0 अंजना सिंह चौहान
37. वाल्मीकि और कालिदास की काव्यकला: डॉ0 नोदनाथ मिश्र
38. वाल्मीकि रामायण में मूल्य चेतना : डॉ0 वृजेश
39. वाल्मीकि तथा उत्तररामचरित का तुलनात्मक विवेचन : डॉ0 श्रद्धा शुक्ला
40. रामायण कालीन संस्कृति : शांतिकुमार नानूराम व्यास
41. रामायणकालीन समाज : शांतिकुमार नानूराम व्यास
42. वा0 और तुलसी साहित्यक मूल्यांकन : डॉ0 रामप्रकाश अग्रवाल
43. रामायणकालीन संस्कृति : एस0एन0 व्यास
44. वाल्मीकि रामायण एवं संस्कृतो में राम : डॉ0 मंजुला सहदेव
45. रामायण और महाभारत में प्रकृति : डॉ0 कांतिकिशोर भारतीया
46. भक्ति काव्य में प्रकृति चित्रण : डॉ0 सुखदेव
47. अलंकार शास्त्र का इतिहास : डॉ0 कृष्ण कुमार
48. भारत की मौलिक एकता : वासुदेवशरण अग्रवाल
49. वाल्मीकि की बिम्ब योजना : डॉ0 रामनरेश तिवारी

50. वा0रा0 और रामचरितमानस	:	जगदीश शर्मा
51. विभिन्न युगों में सीता का चरित्र–चित्रण:		सुधा गुप्ता
52. भवभूति एवं उनकी नाट्यकला	:	अयोध्या प्रसाद सिंह
53. वाल्मीकि रचनामृत	:	आचार्य कुबेरनाथ शुक्ल
54. वाल्मीकि रामायण में अलंकार	:	डॉ0 चन्द्रकान्ता
55. वाल्मीकि रामायण भौगोलिक विवरण	:	गोविन्दराज
56. राजतरंगिणी	:	कल्हण
57. मालतीमाधव	:	भवभूति
58. अध्यात्मरामायण	:	गीता प्रेस गोरखपुर
59. संस्कृति के चार अध्याय	:	रामधारी सिंह दिनकर
60. नीतिशतक	:	भर्तृहरि
61. रामकथा–उत्पत्ति और विकास	:	रेवरेन्ड फादर कामिल बुल्के
62. रामायणकालीन समाज एवं संस्कृति	:	डॉ0 रामेश्वर प्रसाद गुप्त
63. वाल्मीकि रामायण में अलंकार	:	डॉ0 श्रीमती चन्द्रकान्ता
64. पर्यावरणभूगोल	:	सविन्द्र सिंह
65. पर्यावरण	:	बी0एल0 शर्मा
66. पर्यावरण तथा प्रदूषण	:	डॉ0 अरुण रघवंशी
67. पर्यावरण और पारिस्थितिकी	:	डॉ0 बी0के0 श्रीवास्तव
68. वाल्मीकि रामायण कोश	:	राजकुमार राय
69. रामायण कल्याणांक	:	गीता प्रेस गोरखपुर
70. मालविकाग्निमित्र	:	कालिदास
71. रामकथा नवनीत	:	डॉ0 पाण्डुरंग राव
72. भारतीय विवाह का इतिहास	:	विश्वनाथ काशीनाथ राजवाडे
73. राजनीतिक समाजशास्त्र	:	भुनेश्वर नारायण अग्रवाल
74. वाल्मीकि रामायण–काव्यानुशीलन	:	आचार्य शिवबालक राय
75. प्रा0भा0 का राजनै0 एवं सां0 इतिहास	:	प्रो0 राधाकृष्ण चौधरी

76. वाल्मीकि रामायण एवं रामचरितमानस
का तुलनात्मक अध्ययन : डॉ0 विद्या मिश्र
77. रा0मा0 का काव्यशास्त्रीय अनुशीलन : डॉ0 रामकुमार पाण्डेय
78. हिन्दू संस्कार : राजबली पाण्डेय
79. कामसूत्र परिशीलन : वाचस्पति गैरोला
80. वाल्मीकि रामायणकोश : राजकुमार राय
81. वाल्मीकि रामायण एवं रामचरितमानस
का तुलनात्मक अध्ययन : डॉ0 विद्या मिश्र
82. प्रा0भा0सा0 की सांस्कृतिक भूमिका : रामजी उपाध्याय
83. संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास : पी0वी0काणे
84. रामायण और महाभारत में प्रकृति : डॉ0 कान्ति किशोर
85. भक्ति काव्य में प्रकृति चित्रण : डॉ0 सुखदेव

सहायक ग्रन्थों के सांकेतिक रूप

1. वा0रा0	:	वाल्मीकि रामायण
2. महा0भा0	:	महाभारत
3. का0प्र0	:	काव्य प्रकाश
4. सा0द0	:	साहित्यदर्पण
5. अ0स0	:	अलंकारसर्वस्वम्
6. मनु0	:	मनुस्मृति
7. याज्ञ0	:	याज्ञवल्क्यस्मृति
8. कु0सं0	:	कुमारसम्भवम्
9. का0सू0वृ0	:	काव्यसूत्रवृत्ति
10. ना0शा0	:	नाट्यशास्त्र
11. ध्व0	:	ध्वन्यालोक
12. अ0र0	:	अलंकार रत्नाकर
13. काव्या0	:	काव्यादर्श
14. द0रु0	:	दशरुपक
15. रघु0	:	रघुवंश
16. शि0पु0	:	शिवपुराण
17. अर्थ0	:	अर्थशास्त्र
18. मेघ0	:	मेघदूत
19. शि0व0	:	शिशुपालवधम्
20. किराता0	:	किरातार्जुनीयम्
21. उ0रा0	:	उत्तररामचरितम्
22. र0सि0	:	रससिद्धान्त
23. अ0शा0	:	अभिज्ञानशाकुन्तलम्
24. भ0पु0	:	भविष्यपुराण

25. ऋक्0	:	ऋग्वेद
26. यजु0	:	यजुर्वेद
27. साम0	:	सामवेद
28. अथर्व0	:	अथर्ववेद
29. स्क0पु0	:	स्कन्धपुराण
30. रा0क0	:	रामायण कल्याणांक
31. रा0मा0	:	रामाचरितमानस
32. श्रीमद्0	:	श्रीमदभवद्गीता
33. कठोप0	:	कठोपनिषद्
34. छ0उ0	:	छन्दोग्योपनिषद्
35. छ0मं0	:	छन्दोमंजरी